ॐ

मङ्गल समर्पण

2

शुभकामना सन्देश : ट्रस्टी एवं संस्थागत ट्रस्टी

मङ्गल समर्पण...

जिनवचनामृत पान कर तृप्त हुई चिर प्यास।
देख रहे सौवाँ बसन्त पण्डित श्री कैलाश॥
पण्डित श्री कैलाश कहानगुरु के अनुयायी।
भर यौवन में कर्मोदय ने कला दिखायी॥
किन्तु न विचलित हुए आप जिनवर श्रद्धानी।
अपनाया शिवपन्थ शरण ली वचनामृत जिन॥

स्वर्णपुरी में जाकर गुरु का शरणा लीना।
समयसार के पारायण में जीवन दीना॥
पूज्य रामजी और खेमजी भाई का संग।
पाकर चढ़ने लगा जिनागम का अद्भुत रंग॥

गाँव-गाँव में जाकर गुरु सन्देश सुनाया।
स्व में बस अरु पर से खस गुरु वचन सुनाया॥
लिखकर सातों भाग मुमुक्षुगण को अर्पण।
जगत कर रहा आज पुनः उपकार समर्पण॥

निस्पृह हो जीवन भर फैलायी जिनवाणी।
स्वयं किया रसपान यही बस अमर कहानी॥
पञ्च प्रभु तो नित बसते हैं हृदय तुम्हारे।
अतः मात्र कर्मोदय भी हैं तुमसे हारे॥

चिर जीओ या अभी तुम्हारा होय भवान्तर।
भेदज्ञान की अन्तर धारा बहे निरन्तर॥
तत्त्वज्ञान को फैलाने में अर्पित जीवन।
अतः आज यह हुआ प्रकाशित मङ्गल समर्पण॥

– पण्डित अभयकुमार जैन, देवलाली

मङ्गल समर्पण : शुभकामना सन्देश

तीर्थधाम मङ्गलायतन के स्वप्नदृष्टा

— **अजितप्रसाद जैन,** अध्यक्ष
श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, अलीगढ़

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रति समर्पित, वयोवृद्ध विद्वान् पण्डित कैलाशचन्द्र जैन, निश्चित ही उन गिने-चुने सौभाग्यशाली व्यक्तियों में रहे हैं, जिन पर गुरुदेवश्री का वरदहस्त रहा है। आदरणीय पण्डितजी ने पूज्य गुरुदेवश्री से जो कुछ सीखा; अत्यन्त निरपेक्ष भाव से उसे जन-जन तक पहुँचाया है। तीर्थधाम मङ्गलायतन के स्वप्नदृष्टा के रूप में पण्डितजी का योगदान इतिहास में चिरंजीवी रहेगा। आज गुरुदेवश्री के पुण्य प्रभावना उदय और पण्डितजी के शुभाशीर्वाद का ही प्रताप है कि यह तीर्थधाम अपने उद्देश्यों के प्रति दिन-दूनी रात चौगुनी प्रगति कर रहा है।

पण्डितजी के जन्म-शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित 'मङ्गल समर्पण' महोत्सव के अवसर पर मैं, व्यक्तिगतरूप से, अपने परिवार की ओर से तथा श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट की ओर से उनके श्रीचरणों में सादर विनयांजलि समर्पित करता हूँ।

इतिहास के पन्नों पर स्वर्णाक्षरों में....

— **अजित जैन,** बड़ोदरा (ट्रस्टी)

आदरणीय वयोवृद्ध विद्वान पण्डित कैलाशचन्द्र जैन, सम्पूर्ण मुमुक्षु समाज में 'डण्डावाले पण्डितजी' के नाम से सुविख्यात रहे हैं। पूज्य गुरुदेवश्री के प्रति अगाध भक्ति से भरा उनका हृदय, समस्त मुमुक्षुओं के लिये अनुकरणीय है। गुरुदेवश्री से प्राप्त तत्त्वज्ञान को, जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला के सात भाग के रूप में प्रस्तुत करके उन्होंने मानो गागर में सागर ही भर दिया है। मेरा सौभाग्य है कि जब से मैं तीर्थधाम मङ्गलायतन से जुड़ा हूँ, तब से ही पण्डितजी को निकट से देखने का अवसर प्राप्त हुआ है। निश्चित ही उनकी सेवायें, जैन तत्त्वज्ञान की प्रभावना के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखी जायेगी। वास्तव में आज मुमुक्षु समाज में तत्त्वज्ञान की जो जागृति दिखायी देती है, उसमें पण्डितजी की महती भूमिका को नकारा नहीं जा सकता।

पूज्यश्री की जन्म-शताब्दी के अवसर पर मैं, अपने परिवार और ट्रस्ट की ओर से उन्हें सादर वन्दन समर्पित करते हुए स्वस्थ एवं मंगलमय जीवन की कामना करता हूँ।

जीवनमूल्यों की गहरी छाप

— **निखिल महेता,** मुम्बई (ट्रस्टी)

अति पुण्य उदय से मेरा जन्म, पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन के सम्यक्त्व साधनास्थल बाँकानेर में हुआ और मुझे जन्म से ही सनातन दिगम्बर जैन धर्म की प्ररूपणा मेरी नौ वर्ष की उम्र में सन् 1969 में मुम्बई में पूज्य सद्गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के वरदहस्त से प्राप्त हुई। हमारा निवास जैन मन्दिर के समीप ही था, जहाँ प्रतिदिन पाठशाला चलती थी। वहाँ बालब्रह्मचारी हेमन्तभाई, मुम्बई का आगमन हुआ, उन्होंने पाठशाला में तत्त्वज्ञान सिखलाना शुरु किया। हमने जैन बालपोथी और बालबोध आदि सीख लिये तथा लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका को कण्ठस्थ कर लिया।

लगभग सन् 1973 में आदरणीय पण्डितश्री कैलाशचन्द्रजी का घाटकोपर में प्रवचन और कक्षा हेतु आगमन हुआ। वे अपने साथ जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला के सेट लेकर आये थे। हमें लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका का अभ्यास था; इसलिए जैन सिद्धान्तों का अभ्यास अत्यन्त सरलतापूर्वक हुआ। सायंकाल के समय समीपवर्ती बगीचे में पण्डितजी घूमने जाते थे। मैं भी वहाँ दौड़कर पहुँच जाता था। पण्डितजी मेरे कन्धे पर हाथ रखकर चलते जाते और एक-एक प्रश्न-उत्तर कण्ठस्थ कराते जाते। वह दृश्य अभी भी याद आता है। पण्डितजी अत्यन्त कड़क होने से, बड़े लोग तो बहुत डरते थे, परन्तु हम बालक तो अत्यन्त प्रेम से उनके पास तत्त्वज्ञान सीखते थे।

तत्पश्चात् 1998 में यात्रासंघ के साथ अलीगढ़, बुलन्दशहर आने का आमन्त्रण श्री पवन जैन द्वारा प्राप्त हुआ। बुलन्दशहर में पण्डितजी के घर पर भोजन हुआ और बहुत वर्षों के पश्चात् उनसे मिलना हुआ। उस समय भी वे उतने ही कड़क और स्वस्थ दिखायी दिये। लगभग आधे घण्टे उनके प्रवचन का लाभ मिला। उन्होंने मोक्षमार्गप्रकाशक में से अनादि-निधन वस्तुएँ भिन्न-भिन्न अपनी-अपनी मर्यादासहित परिणमित होती हैं, कोई किसी के आधीन नहीं है, कोई किसी के परिणमाने से परिणमित नहीं होती - यह वाक्य कण्ठस्थ करवाया। तीर्थधाम मङ्गलायतन के आद्य ट्रस्टी श्री शीतलप्रसादजी का परिवार बुलन्दशहर के उस मकान में निवास करता था। उन्होंने अत्यन्त भावविभोर होकर कहा - **यहाँ पूज्य गुरुदेव का समवसरण पधारा था।** पण्डितजी द्वारा मुझे स्वहस्त से मुनि रामसिंह रचित पाहुड़ दोहा ग्रन्थ भेंटस्वरूप प्रदान किया गया था। जैसे कड़क पण्डितजी हैं, वैसी ही सचोट शैली इस ग्रन्थ के रचनाकार मुनिश्री की है।

मङ्गलायतन के निर्माण के समय, मैं उत्तरप्रदेश में इंजीनियर के रूप में काम करता था,

तब श्री पवनभाई के घर अलीगढ़ जाना हुआ। पण्डितजी भी वहीं थे, पवनभाई के घर में भोजन करने के समय दो बार नीचे आते थे और फिर छत पर अपने कमरे में चले जाते थे। उनके कमरे में पुस्तकों का भण्डार था। आजीवन पूज्य गुरुदेवश्री के तत्त्व प्रचार में समर्पित पण्डितजी ने मुझसे कहा - बेटा! प्रचार-प्रसार की झंझट में पड़ने के बदले पहले तत्त्व का सांगोपांग अभ्यास कर ले और आत्मस्वरूप का ग्रहण कर ले। उन्होंने मुझे यह प्रेरणा भी प्रदान की - जब तुम्हें समय हो, दो-तीन महीने मेरे साथ रहना। तत्पश्चात् तो जब-जब मङ्गलायतन जाना हुआ, उनके आशीर्वाद का लाभ मिला ही है। **पण्डितजी के जीवनमूल्यों की छाप मुझ पर अत्यन्त गहरी है।**

मुमुक्षु जीवों के आदर्श, प्रखर तत्त्व-अभ्यासी, संयमी जीवन जीनेवाले, पूज्य गुरुदेवश्री के तत्त्व का झण्डा सम्पूर्ण उत्तर भारत में फहरानेवाले और तीर्थधाम मङ्गलायतन के प्रेरक, आदरणीय पण्डितश्री कैलाशचन्द्रजी को शताब्दी वर्ष के प्रसंग पर सादर वन्दन समर्पित है।

समर्पित है - श्रद्धा के सुमन

— विजय जैन, दादर, मुम्बई (ट्रस्टी)

आदरणीय पण्डितश्री कैलाशचन्द्रजी, पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के अनन्यतम शिष्यों में से एक हैं। जिन्होंने गुरुदेवश्री द्वारा प्राप्त तत्त्वज्ञान को अपनी सरल, सुबोध शैली से प्रचारित-प्रसारित किया है। पण्डितजी का मुम्बई-दादर में भी कई बार आना हुआ है। हमने उनके प्रवचन और कक्षाओं का भरपूर लाभ लिया है। वास्तव में वर्तमान मुमुक्षु समाज पर पण्डितजी का बहुत उपकार है। उनके जन्म शताब्दी अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

एक समर्पित व्यक्तित्व : पण्डित कैलाशचन्द्र जैन

— **श्री दिगम्बर जैन स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट सोनगढ़,** (संस्थागत ट्रस्टी)
हस्ते हसमुखभाई पी. वोरा, सोनगढ़/मुम्बई

वीतरागशासन प्रभावक पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी, तद्भक्त पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन एवं आत्मसाधना स्थली तीर्थधाम स्वर्णपुरी के प्रति समर्पित, पण्डित कैलाशचन्द्र जैन अलीगढ़वालों से कौन अपरिचित है? आदरणीय पण्डितजी, पूज्य गुरुदेवश्री के अनन्यभक्त रहे हैं और गुरुदेवश्री से प्राप्त तत्त्वज्ञान को अपने सोनगढ़ प्रवास के दौरान प्रवचन मण्डप में प्रातः काल कक्षाओं के माध्यम से मुमुक्षुओं को पढ़ाया करते थे। इसके साथ-साथ पूरे देश में घूम-घूमकर इस वीतरागी तत्त्वज्ञान का जो प्रचार-प्रसार किया है, वह निश्चित ही प्रशंसा के योग्य है।

आदरणीय पण्डितजी के हृदय में पूज्य गुरुदेवश्री एवं बहिनश्री के प्रति अत्यन्त भक्तिभाव था, वे कहते हैं कि पूज्य गुरुदेवश्री ने भरतक्षेत्र को विदेहक्षेत्र और पंचम काल को चौथा काल बना दिया है। इसी तरह गुरुदेवश्री की तुलना, वर्तमान में तीर्थंकर जैसा योग और बहिनश्री की तुलना, वर्तमान में गणधर जैसे योग से करनेवाले उनके वचन निश्चित ही उनके हृदय में व्याप्त ज्ञानी-धर्मात्माओं के प्रति भक्तिभाव को प्रदर्शित करते हैं।

पूज्य गुरुदेवश्री की सातिशय वाणी के प्रचार-प्रसार हेतु आपकी प्रेरणा से निर्मित तीर्थधाम मङ्गलायतन भी वर्तमान में पूज्य गुरुदेवश्री की धर्म-देशना का जो प्रचार-प्रसार कर रहा है, उसमें भी आदरणीय पण्डितजी की महती भूमिका से इनकार नहीं किया जा सकता।

आदरणीय पण्डितजी अपने वर्तमान जीवन के शताब्दी वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं, वे सम्भवतः पूज्य गुरुदेवश्री के अनुयायियों में वर्तमान में सर्वाधिक वयोवृद्ध विद्वान हैं, जिनका सुयोग हमें प्राप्त है। इस समय शारीरिक शिथिलता के बावजूद भी उनकी तत्त्वज्ञान की निष्ठा इस बात को दर्शाती है कि पूज्य गुरुदेवश्री की वाणी के संस्कार जीवन में कैसा चमत्कार कर सकते हैं?

हम सभी पूज्य गुरुदेवश्री के अनन्यभक्त, आदरणीय पण्डित कैलाशचन्द्रजी के प्रति अपने हार्दिक श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए भावना भाते हैं कि सुदीर्घ काल तक उनकी छत्रछाया मुमुक्षु समाज पर बनी रहे।

तत्त्वनिष्ठ आदरणीय पण्डितजी

— **आचार्य कुन्दकुन्द जैन जागृति सेन्टर, पौन्नूर** (संस्थागत ट्रस्टी)
हस्ते, अनन्तराय ए. सेठ, मुम्बई

पण्डित कैलाशचन्द्र जैन उन गिने-चुने विद्वानों में है, जिन्हें करुणामूर्ति पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी से सन्मार्ग प्राप्त हुआ है। गुरुदेवश्री द्वारा प्राप्त जैन तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में नि:स्वार्थभाव से अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित करनेवाले विद्वानों में अभी सम्भवत: पण्डितजी ही सर्वाधिक वयोवृद्ध विद्वान हैं।

यद्यपि पण्डितजी से मेरा सीधा परिचय नहींवत् रहा है, तथापि अपने मङ्गलायतन प्रवास के दौरान पण्डितश्री के सन्दर्भ में जो कुछ जानने को मिला, उससे मेरा हृदय गद्गद् हो उठा।

मुझे देश के अनेक भागों में जाने का अवसर प्राप्त होता रहा है; जहाँ पण्डितजी द्वारा पढ़ाये गये मुमुक्षुओं से मिलकर मैं निश्चितरूप से कह सकता हूँ कि उन्होंने पूज्य गुरुदेवश्री के मूल तत्त्वज्ञान को एक घुट्टी की तरह सबको पिलाया है।

लोकेषणा से अत्यन्त दूर एवं सादा जीवन उच्च विचार की प्रतिमूर्ति, पण्डित कैलाशचन्द्र जैन के स्वप्नों का साकाररूप तीर्थधाम मङ्गलायतन, आज पूज्य गुरुदेवश्री के निर्मल मार्ग का जिस दृढ़तापूर्वक प्रचार एवं नन्हें-मुन्ने बच्चों में उसका बीजारोपण कर रहा है, वह पण्डितजी के अन्तर में व्याप्त पूज्य गुरुदेवश्री के प्रति भक्ति को ही प्रतिबिम्बित करता है।

मैं पण्डितजी के शताब्दी वर्ष में पदार्पण के उपलक्ष्य में उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ।

मङ्गल समर्पण

आदरणीय पण्डितश्री कैलाशचन्द्रजी जैन : एक जिनधर्म प्रेमी सत्यनिष्ठ कर्मठ निस्पृही अद्भुत व्यक्तित्व

— **श्री कुन्दकुन्द-प्रवचन-प्रसारण संस्थान उज्जैन** (संस्थागत ट्रस्टी)
हस्ते, पण्डित विमलचंद झांझरी, उज्जैन

पण्डितजी साहब लगभग पचास वर्ष पूर्व उज्जैन पधारे थे। मैं प्रात: पाँच बजे उठकर उनके साथ घूमने जाता था। रास्ते में तत्त्वचर्चा, चिन्तन-मनन का कार्य चलता रहता था।

उनकी क्लास में बैठते थे, डर लगता था। बहुत ही कड़क थे – तत्काल ही याद कराते, प्रश्न पूछते, जरा गलती हो तो फोरन निगोद का भय बतलाते थे। 'डण्डेवाले पण्डितजी' कहलाते थे। उनका करुणाभाव बहुत ही गहरा था। तत्त्वज्ञान में जीव पारंगत हो – यही उनकी पवित्र भावना थी।

उनकी सोनगढ़ में प्रात: की नियमित क्लास चलती थी। हम उसी में बैठते थे। पूज्य गुरुदेव की अपार भक्ति के साथ वही कठोर, किन्तु करुणामयी शैली थी। जैन शिक्षण का अद्भुत रंग था। अनादि का अज्ञान होने से, प्रत्येक सिद्धान्त समझना व समझाना मोक्षगामी जीवों का ही सामर्थ्य है।

मुझे देश में कई स्थानों पर जाने का सौभाग्य पर्व के अवसर पर मिला। हर जगह पण्डितजी की शिष्य मण्डली उनके उपकार को अहोभाव से स्मरण करती हुई मिली। छिन्दवाड़ा, सिवनी, इन्दौर, उज्जैन, हिंगोली, नागपुर, दिल्ली, कानपुर, बम्बई आदि अनेक-अनेक स्थानों पर महीनों रहकर पण्डितजी ने तत्त्वज्ञान का बिगुल बजाया है।

उनकी सरलता, सहजता, निस्पृहता से सभी अत्यन्त प्रभावित रहे हैं।

तत्त्वज्ञान पाठमाला के उनके द्वारा लिखित प्रश्नोत्तर अनेक जीवों के ज्ञानचक्षु खोलने में निमित्त हैं।

सोनगढ़ के प्रवचनमण्डप में सादगीपूर्ण जीवन, नियमित शिक्षण क्लास सदैव स्मरण रहता है। श्री पवनजी को बहुत छोटी उम्र में पण्डितजी की सेवा में उत्साहित और विनीत देखकर ऐसा नहीं लगता था कि यह जीव इना बड़ा धर्म प्रभावक व सच्चे देव-शास्त्र-गुरु का दृढ़ श्रद्धानी होगा, क्योंकि उस समय इतनी रुचि नहीं थी।

तीर्थधाम मङ्गलायतन की अजोड़ रचना, कैलाशपर्वत, धन्य मुनिदशा, भव्य पञ्च

कल्याणक, आदिनाथ विद्यानिकेतन, मङ्गलायतन का शानदार अद्‌भुत जिनमन्दिर, विश्वविद्यालय एवं वहाँ अतिभव्य पञ्च कल्याणक महोत्सव आदि अनेक रचनाएँ, अनेक साहित्य का प्रकाशन आदि-आदि आप ही की प्रेरणा के प्रतीक हैं।

शतायु के इस मंगल प्रसंग पर उनके अनेक-अनेक उपकारों का स्मरण करते हुए शत-शत नमन।

अभिनन्दनीय का अभिनन्दन

— श्री कुन्दकुन्द-कहान-दिगम्बर जैन आत्मार्थी ट्रस्ट दिल्ली
(संस्थागत ट्रस्टी)
हस्ते, पण्डित जतीशचन्द्र शास्त्री, दिल्ली

'अहो तदेप पाण्डित्यं यत्संसारात् समुद्धरेत' अर्थात् वही पाण्डिय सार्थक है, जिससे निज का उद्धार हो। यह परम सत्य वाक्य, सम्प्रति अभिनन्दनीय पण्डित कैलाशचन्द्रजी, जिन्हें हम प्यार से 'डण्डेवाले पण्डितजी' के नाम से पुकारते हैं, उन पर शत-प्रतिशत लागू होता है।

सरलता की मूर्ति, सहजता की प्रतिकृति, निश्छलत की आकृति, प्रेम एवं सौहार्द की प्रतिमा, दया, करुणा का आदर्श एवं अनुशासन का जीवन्त उदाहरण — यदि इन सबके लिए हम कोई शब्द देना चाहें तो वह है हमारे पण्डित कैलाशचन्द्रजी।

ज्ञान के आलोक पुरुष : आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अतीन्द्रिय आनन्द का हमें जो मार्ग बताया, उसी को आदरणीय पण्डित कैलाशचन्द्रजी ने निस्वार्थभाव से अपनी वाणी एवं लेखनी से आगे बढ़ाया है।

सीधी-सादी धोती, कुर्ता और टोपी में दमकता व्यक्तित्व, शब्दों से टपकता पाण्डित्य, वचनों में माधुर्य और चिन्तन से छलकती आध्यात्मिकता आपकी अपनी निशानी है।

स्वयंबुद्ध : कुछ लोग बड़े घर में जन्म लेकर बड़े बन जाते हैं; कुछेक बड़ों की कृपा से बड़े बन जाते हैं, लेकिन बहुत कम ऐसे व्यक्ति होते हैं, जो अपने पुरुषार्थ और सेवा सातव्य के बलबूते पर अपने को बड़ा बना लेते हैं।

निस्पृह साधक : जिनवाणी की निस्पृह उपासना की प्रेरणा, सोनगढ़ के सन्त पूज्य गुरुदेवश्री से प्राप्त हुई। आपने अपना जीवन उनकी भावना के अनुरूप आर्षपरम्परा से प्राप्त जिनवाणी माँ की आराधना और उसके सर्वांगीण विकास में निरोग अवस्था में करते रहे। आज उनके सुपुत्र श्री पवनजी जैन, जिनवाणी की उपासना और विकास में भी तन-मन एवं धन से समर्पित हैं।

आपके निरोगमयी सुदीर्घ जीवन की कामना करता हुआ यह अभिलाषा करता हूँ कि आप देव-गुरु-शास्त्र - द्वारा बताये हुए मार्ग पर चलकर सम्यक् विजय अर्थात् ऐसी विजय प्राप्त करें कि जिससे आपको पुन: संसार में न आना पड़े। अन्त में मोक्षमार्ग की निस्वार्थ सेवी तुम्हें प्रणाम! तुम्हारी सामर्थ्य को प्रणाम!!

उनके समक्ष वह उतना ही बड़ा है जो जितना बड़ा आत्मार्थी है

— पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर (संस्थागत ट्रस्टी)
हस्ते, परमात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर

आदरणीय पण्डितजी कोई व्यक्ति नहीं, एक चलती-फिरती संस्था रहे हैं, उनका जीवन एक आत्मार्थी की प्रयोगशाला रहा है। यदि कोई स्वयं देखना चाहता है कि एक आत्मार्थी श्रावक का जीवन कैसा होता है, कैसा होना चाहिए तो उसे आगम के पन्ने पलटना ही आवश्यक नहीं है, यह जीवन्त देखा जा सकता है, पण्डित कैलाशचन्द्रजी के जीवन में।

अरे! निर्ग्रन्थ सन्तों की तो बात ही क्या है, वे तो चलते-फिरते सिद्धों के समान होते हैं, परन्तु आत्मार्थी गृहस्थ का जीवन भी कल्याणक और पथप्रदर्शक हुआ करता है। सामान्यजन से एकदम विपरीत; जहाँ एक ओर सामान्यजन, दिन-रात विषय-कषाय में ही रत रहता है और कभी-कभार बस रश्म के निर्वाह के लिए कोई धार्मिक क्रिया कर लिया करता है या यूँ कहें कि दिन-रात बस संसार बढ़ाने में ही लगा रहता है, वहीं दूसरी ओर आत्मार्थी अपने इसी जीवन का उपयोग, संसार को काटने के उपक्रमों में करता है, उसकी लौकिक गतिविधि तो मात्र सात्विक ढंग से जीवन क्रम चलता रहे, उस सीमा तक ही सीमित रहती है।

उक्त सन्दर्भ में यदि पण्डितजी के जीवन पर दृष्टिपात किया जावे तो हम पायेंगे कि उनका जीवन एक आदर्श आत्मार्थी के जीवन का जीवन्त उदाहरण है। किसी एक गाँव–शहर में जाकर लगातार दो–तीन महीने रहना, दिन में तीन बार क्लास लेना और बाकी समय भी अपने स्वाध्याय में ही व्यस्त रहना, करुणापूर्वक समझाना, आग्रहपूर्वक क्लास में बुलाना, किसी श्रोता का ध्यान भंग होने पर या नींद की झपकी आ जाने पर ममतामयी फटकार – कोई विरला ही होगा जिसे उनकी फटकार भी कभी चुभी होगी। जिसकी फटकार ऐसी हो, उसका दुलार कैसा होगा ?

उनके सारे रिश्ते आत्मार्थिता के इर्दगिर्द बने। जो आत्मार्थी है, वह उनका करीबी रहा, आत्मीय बन गया; उनका निकटतम सम्बन्धी भी यदि आत्मार्थी न बन सका तो उनके निकट न रहा। उनकी रिश्तेदारी का माध्यम देह की परम्परा नहीं, आत्मार्थिता बनी; और तो और स्वयं उनका पुत्र भी तब तक उनके स्नेह का भाजन न बन सका, जब तक वह स्वयं इस मार्ग पर नहीं लग गया।

'यह तो जरूरी है, यह तो अपरिहार्य है, इसके बिना तो काम चल ही नहीं सकता, इसके बिना तो जीवन सम्भव ही नहीं, आज के जमाने यह तो चाहिए और यह तो हो ही नहीं सकता' – ऐसे न जाने कितने बहाने हमने खोज रखे हैं, अपने आपको पतित करने के लिए; और इनके सहारे सुविधापूर्वक अपने आपको आत्मकल्याण के मार्ग से वंचित बनाए रखने में हम सफल हैं।

यदि इन सब बहानों के जवाब चाहिए तो पण्डितजी के जीवन पर दृष्टिपात करें। पण्डितजी ने कैसा जीवन जिया, अपने जीवन में क्या किया और क्या नहीं किया, और फिर आखिर क्या कमी रह गयी, उनके जीवन में ? वह जानना मात्र रोचक ही नहीं, अत्यन्त उपयोगी है।

मैं सर्व प्रथम उनके सम्पर्क में तब आया जब (संभवत: 1972 में) मैं 14 वर्ष का था और अपने दादाजी के साथ श्रावण मास में आयोजित होनेवाले शिविर में सोनगढ़ था और वे वहाँ पर क्लास लिया करते थे। एकदम विरल व्यक्तित्व, सबसे पृथक्, अन्तर में करुणा का झरना और प्रकट में कठोर सी दिखने वाली प्रताड़ना, पहली ही मुलाकात में वे मेरे मानस पटल के जिस उच्चासन पर विराजमान हो गये थे, आज भी वे वहीं पर विराजमान हैं – उनके इस शतक पर उन्हें शत–शत नमन !

मङ्गल समर्पण

निज शुद्धात्मा की महिमा से आपूरित

— श्री ज्ञायक पारमार्थिक ट्रस्ट ध्रुवधाम बांसवाड़ा

(संस्थागत ट्रस्टी)

हस्ते, महीपाल ज्ञायक, बाँसवाड़ा (राज०)

आध्यात्मिक सत्पुरुष पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के द्वारा इस पंचम काल में जिनेन्द्र कथित विश्व व्यवस्था का उद्घाटन 45 वर्षों तक किया गया। जिसके प्रचार-प्रसार हेतु अनेक मनीषियों ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया, जिनमें पण्डित कैलाशचन्द्रजी का योगदान महत्वपूर्ण है।

आदरणीय पण्डितजी ने जीवन के अधिकांश समय में गुरुदेवश्री द्वारा प्ररुपित तत्त्वज्ञान को गाँव-गाँव पहुँचाने हेतु निरन्तर भ्रमण किया और कक्षा की नयी विधा अपनाकर अनेक उदाहरणों से जनमानस के मस्तिष्क में भवभयहारी तत्त्वज्ञान को तर्क और युक्तिसंगत विवेचन के साथ पहुँचाया।

आदरणीय पण्डितजी शतायु होने की ओर अग्रसर हैं, इस आयु में भी वे गुरुदेवश्री व उनके तत्त्वज्ञान के प्रति सजग हैं, वे निरन्तर निज शुद्धात्मा की महिमा से आपूरित हैं, उनकी श्रद्धा में ज्ञायक का जोर प्रति समय परिलक्षित होता है। उनकी प्रेरणा व उपस्थिति में संस्थापित तीर्थधाम मङ्गलायतन, न केवल विश्व की मुमुक्षु समाज की, अपितु सम्पूर्ण जैन समाज की गरिमामयी धरोहर है। वहाँ स्थापित जिनबिम्बों के दर्शन व विद्यार्थियों की दिनचर्या प्रत्येक साधर्मी को प्रमुदित करती है।

आदरणीय पण्डितजी के आदर्शों का अनुसरण करते हुए आदरणीय पवनजी ने मुमुक्षु समाज की एकता, गुरुदेवश्री द्वारा उद्घाटित तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु, स्वास्थ्य की प्रतिकूलता होते हुए भी, जो कार्य किया है, उसके प्रति साधर्मी समाज चिर ऋणी रहेगा।

तीर्थधाम मङ्गलायतन में पण्डितजी की चारों पीढ़ियों की उपस्थिति हर्षमय रोमांच उत्पन्न करती है।

पण्डितजी अन्तरंग-बहिरंग स्वस्थ रहते हुए चिरकाल तक मङ्गलायतन में निवास करें – ऐसी हमारी हार्दिक भावना है।

वज्रादपि कठोराणि, मृदुणि कुसुमादपि

— **श्री परमागम श्रावक ट्रस्ट सोनागिर** (संस्थागत ट्रस्टी)
हस्ते, पदमकुमार जैन (पहाड़िया), सोनागिर

आध्यात्मिक सत्पुरुष पूज्य श्री कानजीस्वामी द्वारा प्रसारित आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान को सम्पूर्ण भारत देश के कोने-कोने में लगभग 35 वर्ष तक जन-जन में प्रचारित करनेवाले वयोवृद्ध विद्वान आदरणीय पण्डित कैलाशचन्द्रजी, बुलन्दशहरवाले अलीगढ़ का नाम, पूज्य गुरुदेव के अनन्य शिष्यों में से एक है, जिन्होंने स्वयं तो उस अध्यात्म तत्त्व ज्ञान की गंगा का रसपान किया ही, साथ ही मुमुक्षु समाज में भी अपनी अनूठी ठोस निर्णयात्मक भेदविज्ञान रूपी शैली के द्वारा मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया।

मध्यप्रदेश की प्रसिद्ध औद्योगिक नगरी इन्दौर के मारवाड़ी मन्दिर, शक्कर बाजार, रामाशाह जी मन्दिर, मल्हारगंज आदि में आदरणीय पण्डितजी बार-बार पधारे। मैं एवं मेरे बड़े भाई स्व. मांगीलालजी पहाड़िया परिवार अपना सौभाग्य समझता है कि उनकी प्रत्येक कक्षा एवं प्रवचनों का सम्पूर्ण लाभ हमने प्राप्त किया, चाहे वह किसी भी मन्दिर में हों।

आज भी उनके इन्दौर में अनेकों प्रशंसक हैं, जो उनको सदैव स्मरण करते हैं। उनकी मधुरवाणी, ऊपर से कठोर एवं अन्दर से वात्सल्यपूर्ण सिंह गर्जना की तरह गरजती थी, जिसमें प्रत्येक श्रोता को अनेकों सिद्धान्त, प्रवचन एवं कक्षाओं में याद कराकर बुलवाते थे। जैसे मोक्षमार्गप्रकाशक में आए 'अनादिनिधन वस्तुएँ भिन्न-भिन्न.... मानो इस सिद्धान्त में सम्पूर्ण जिनागम समा गया हो। जब तक सभी श्रोताओं को यह सिद्धान्त कण्ठस्थ नहीं हो जाता था, वे आगे नहीं बढ़ते थे। यही कारण है कि हमारे परिवार के प्रत्येक सदस्य को यह सिद्धान्त कण्ठस्थ है एवं हर परिस्थितियों में शान्ति प्रदान करता है।

इस प्रकार आदरणीय पण्डितजी की प्रवचन एवं कक्षाएँ चलती थीं, वहाँ देहरादून से जैन सिद्धान्त रत्नमाला के सातों भाग मंगाकर प्रत्येक श्रोता के हाथों में दिलाते थे एवं देह (नौ कर्म) एवं आत्मा का ऐसा प्रत्यक्ष भेदविज्ञान कराते मानो सम्यक्दर्शन प्राप्त करना अत्यन्त सरल एवं सहज है।

आपकी ही तरह आपके इकलौते होनहार सुपुत्र श्री पवनजी भाईसाहब ने तीर्थधाम मङ्गलायतन एवं मङ्गलायतन विश्वविद्यालय की रचना करवाकर आदरणीय पण्डितजी साहब के वीतराग प्रभावना के स्वप्न को साकार किया है।

पहाड़िया परिवार, कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट, साधना नगर एवं स्वाध्याय भवन तुकोगंज, इन्दौर तथा श्री परमागम श्रावक ट्रस्ट सोनागिर अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव कर रहा है कि आदरणीय पण्डितजी साहब, शताब्दी वर्ष में प्रवेश करने जा रहे हैं। आप दीर्घायु हों और इसी प्रकार अपने निर्मल तत्त्वज्ञान से स्वपर के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते रहें, यही मंगल भावना है।

मङ्गल समर्पण

Manglayatan

I am very pleased to convey congratulations and felicitations on be half of Shah Bhagwanjibhai Kachra Family to Revered Shree Panditji Kailashchandji on achieving milestone age of almost a centaury. We all wish him many more years of health, so that his "Purusharth" of satdharma towards achievement of ultimate goal of nirvana continues. He has bean one of the very strong pillars in prabhavna and propogation of sat-tatva preached by Gurudevshree Kanjiswami.

Panditji has lived many years under the umbrella of Gurudevshree and has absorbed and digested the principles and tatva preached by Gurudevshree. Panditji has taught and inspired many during his lifetime to follow the satdharma. My late father had spent some years in exhaled Company of Panditji during his stay of many years in songadh in the shadow of Gurudevshree. My father quite often talked about Panditji, who was known affectionately as "dandawala Panditji"

Panditji has bean inspiration in founding and establishing of Manglayatan, which has not only become important noteworthy jain tirthdham but has become instrumental institution in extending knowledge of Sat-tatva in very methodical manner to young students living at Manglayatan chhatralaya and studying at other schools. The inanguration of jain temple and pratishtha of Bhagwan at Manglayatan University has become a symbol of jain tatva for students and for some it may turn out to be a guiding star and inspiration towers understanding and learning philosophy of Jainism. His contribution in compiling "Jinagamsar" is unique and immense, which shree Pawanji has demonstrated in the instroduction of "Jinagamsar"

I had the privilege of meeting Panditji first time in 2002 during shilanyas Vidhi of Manglayatan and many more times over the years. I have been impressed with his determination and strictness in practice, pursuance and propagation of principles of sat-tatva, and never was time for talk of any other matters. My family has been very closely associated with shree Pavanji's family and we consider Panditji as father and elder of our family. Panditji is fortunate that their four generations are today living and are strongly indoctrined in belief of true sat-dharma.

Best Wishes

Bhimji Bhagwanji Shah
Shah Bhagwanji Kachrabhai Parivar
London (U.K.)

पूज्य गुरुदेवश्री के शिष्यों में से एक
पण्डित कैलाशचन्द्रजी

— प्रफुल्लभाई डी. राजा
नैरोबी, केन्या

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के शिष्यों में एक पण्डित कैलाशचन्द्रजी बुलन्दशहरवाले भी हैं, जिन्होंने अपने समय में सारे भारतवर्ष में घूम-घूमकर पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा बताया गया भेदविज्ञान एवं आत्मानुभव का मार्ग बताया। आप जहाँ भी जाते थे, 08दिन से 30-40 दिन तक वहाँ रुककर, धर्म प्रचार करते। आपने तत्त्वप्रचार नि:स्वार्थभाव से किया। इतना ही नहीं, आपके द्वारा रचित सात भागों के प्रश्नोत्तरों को कोई मुमुक्षु आंशिक या पूर्ण याद करके सुनाता तो आप उसे स्वयं की ओर से पुरस्कृत भी करते।

आज से लगभग 10-12 वर्ष पहले हमारा प्रथम परिचय देहरादून यात्रा में गये, तब हुआ। तब आप कक्षा में सोते हुए श्रोताओं को डण्डा ठोककर जगाते थे।

सादा जीवन, निर्लोभ वृत्ति एवं डंके की चोट पर तत्त्व परोसनेवाले विरले व्यक्तियों में आप एक थे। जहाँ भी आप जाते, वहाँ पूज्य गुरुदेवश्री के नाम का डंका बजाते एवं एक द्रव्य, दूसरे द्रव्य का कुछ नहीं करता क्योंकि एक द्रव्य, दूसरे द्रव्य में व्यापता (पसरता-तन्मय होता) नहीं। आपने पर्याय की स्वतन्त्रता को बहुत ही प्रभावशाली ढंग से समझाया कि प्रत्येक द्रव्य के प्रत्येक गुण की प्रत्येक पर्याय, निमित्त एवं स्वत्रिकाली द्रव्य की अपेक्षा रखे बिना, षट्कारक से परिणमित होती है एवं कहते कि यह बात हमने पूज्य गुरुदेवश्री से सीखी है।

सभी जगह जाकर प्रत्येक आत्मार्थी को सोनगढ़ जाने की प्रेरणा देते। **आपके रोम-रोम में ऐसा लगता कि पूज्य गुरुदेवश्री का वस्तुस्वतन्त्र तत्त्व भरा हो।**

आप कहते कि सच्चे देव-शास्त्र-गुरु हित में निमित्त हो सकते हैं परन्तु हमारा हित कर नहीं सकते।

आपकी शताब्दी पर आपको कोटिश: अभिनन्दन।

मङ्गल समर्पण

Dear Pawanbhai

Sadaar Jai Jinendra

Hope you are well and not running from here to there.

I heard that your father Pt Kailashchandji will be nearing 100 years in this boby. I had the pleasure of meeting Panditji at your house in Aligarh for the first time 10 years ago. I was stunned that within minutes of meeting he told me the main essence of what Pujya Gurudev Kanjiswami preached for 45 years. That was "material things like house, car, family etc was all immaterial, and so is this body we are born into, remove yourself from the outside world and go into your inside world of pure soul. That is the only place of happiness as Gurudev has said". These words have stuck to me since then. He gave the main object of our religion and was not interested in other talk.

I then got to know what he had been though in his life, it is a tribute to Pujya Shree Gurudev Kanjiswami that such men propagated his interpretation of true Digamber religion. Pt. Kailashchandji was lucky to have spent time in Songadh and in presence of Gurudev who on many occasions mentions his name. Panditji preached Digamber Jainism in most parts of Northern India.

Especially in Dheradhun, where I went to visit the mandal, I was shocked to see how many followers of Gurudev true to swadhay of main scriptures like Samaysar, Pravachansar etc in such remote place, this all is due to the efforts of Pt. Kailashchandji.

From many visits to Aligarh I met Panditji and is always welcoming, I have found that if there is a disciple of Gurudev Kanjiswami then Pt Kailashchandji fits the bill. One has only have to look at what has been achieved at Mangalayatan, to see the dedication of Panditji's family to Pujya Shree Kanjiswami and Digamber Jain Religion. Words are actually not enough to describe one has to experience it.

To achieve 100 years is an enormous feat, an even bigger one is to have spent knowing one trueself, the soul.

I wish him good health and continuous in the path of salvation that he has started to walk on.

Yours sincererly

Vijen Shah, London (U.K.)

उपकृत हुआ मुमुक्षु समाज

— **बसंत एम. दोसी,** महामन्त्री
श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई

आत्मार्थी पण्डित श्री कैलाशचन्दजी, पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी वर्तमान युग के अध्यात्म प्रवक्ता बनकर हम सबके उपकारी हैं। उनके सदुपदेश से शास्त्रों के मर्म को ग्रहण करते हुए जो प्रचार-प्रसार का संगीन अनुष्ठान फैला, उसमें पण्डित श्री कैलाशचन्दजी (बुलन्दशहर) का योगदान अविस्मरणीय हैं। आज से करीब 45 साल पूर्व पण्डितजी मुम्बई पधारे। पन्द्रह दिन तक आपके धार्मिक वर्ग का लाभ हमें मिला। मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ के आधार पर आपने श्रोताओं को शिक्षित किया। आपके क्लास में श्रोता स्फूर्ति और एकाग्रतापूर्वक पढ़ता है। जैनदर्शन के मूलभूत सिद्धान्तों को आप श्रोता के मानसपट पर तथा हृदय पर अंकित कर देते हैं। आपके सुपुत्र श्री पवनकुमारजी जैन, जो धर्म प्रचार में सक्रियतापूर्वक संलग्न हैं, सो आदरणीय पण्डितजी का ही प्रताप है। देश का मुमुक्षु समाज वयोवृद्ध पण्डितजी साहब से उपकृत हैं और उनकी मंगलमय मोक्षयात्रा-साधना की कामना करता है।

सचलतीर्थ : पण्डित कैलाशचन्द्रजी

— श्री अच्युतानन्द मिश्रा
कुलाध्यक्ष – मङ्गलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ़ (उ०प्र०)
पूर्व कुलपति, श्री माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल (म०प्र०)

श्रद्धेय पण्डित कैलाशचन्द्रजी का प्रथम दर्शन मुझे लगभग डेढ़ दशक पूर्व अलीगढ़ में हुआ था। अवसर था उनके पुत्र श्री पवन जैन द्वारा सम्पादित पुस्तक 'जिनागमसार' के लोकार्पण का। सरल, सहज और सादी वेशभूषा में उन्होंने पुस्तक के महत्त्व और उपादेयता का वर्णन किया था। इस विशेष अवसर के लिए दूर-दूर से लोग आये थे और पण्डितजी भी संभवत: देहरादून से आमन्त्रित किये गये थे। इससे पूर्व मैंने उनकी टाई लगायी हुई एक तस्वीर देखी थी। दिल्ली लौटने की जल्दी में उस दिन औपचारिकता के अतिरिक्त कोई विशेष बातचीत नहीं हो सकी, लेकिन कुछ दिनों बाद उन्हें देहरादून के एक आयोजन में दोबारा सुनने का अवसर मिला था। श्रीमती वीनाजी और श्री राजेन्द्रजी के घर पर दोपहर के भोजन में मैं भी सम्मिलित था, जहाँ पण्डितजी से आत्मीय परिचय हुआ था। बाद के वर्षों में और आज तक उनका अहेतुक स्नेह अखण्डरूप से मुझे प्राप्त है।

पण्डित कैलाशचन्द्रजी, जैनधर्म और दर्शन के अप्रतिम विद्वान् ही नहीं, साधक और प्रचारक हैं। पिछले लगभग पचास वर्षों से देश के अधिकांश भागों में जैनदर्शन पर प्रवचन और दिगम्बर जैन मन्दिरों की स्थापना का उनका अखण्ड व्रत चल रहा है। एक बार उन्होंने मुझे सुनाया था कि स्वाधीनता के पूर्व लाहौर में उन्हें जैनधर्म के प्रचार में कितनी कठिनाईयाँ आयीं थीं। जैनधर्म का मैं साधारण जानकार भी नहीं हूँ लेकिन हिन्दूधर्म और वैदिकदर्शन तथा जैनदर्शन के बीच विभाजक रेखा बहुत क्षीण है। पुनर्जन्म, मोक्ष और आत्मा को स्वीकार करनेवाले दर्शन को नास्तिकदर्शन के रूप में प्रचारित क्यों किया गया, इसका निराकरण मुझे कभी नहीं हो पाया। केवल वेदों के विरोध को आधार बनाकर नास्तिक घोषित करने का प्रस्ताव कितना समीचीन है... जनश्रुतियों को यदि ऐतिहासिक प्रमाण मानें तो आदि तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के ही पुत्र थे महाराज भरत; जिनके नाम पर देश का नाम 'भारतवर्ष' पड़ा है। मान्यता यह भी है कि बाईसवें तीर्थंकर नेमिनाथ भगवान, श्रीकृष्ण के चचेरे भाई थे।

सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र को अपने जीवन में साक्षात् धारण करनेवाले पण्डितजी, जैनदर्शन की पञ्च परमेष्ठी कोटियों में से किस कोटि में आते हैं, इसका

निर्णय मेरे जैसा अज्ञानी व्यक्ति तो नहीं कर सकता, लेकिन देश भर में फैले हुए उनके शिष्यों में से कई को मैंने एक सचलतीर्थ और जीवन्मुक्त सन्त की तरह सेवा करते हुए देखा है। इसका एक प्रत्यक्ष प्रमाण तो यही है कि 'जीवेद शरदः शतम्' को साकार करते हुए अपने देश और अपने परिजनों को आशीर्वाद देने के लिए वे उपस्थित हैं। उनकी लोकयात्रा और आशीर्वाद का हाथ इसी तरह दीर्घकाल तक संबल के रूप में बना रहे यही प्रार्थना है।

शुभकामना संदेश

— फकीरचरण परीडा
परीडा मूर्ति कला केन्द्र, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

श्री पवन जैन के साथ मेरा परिचय सन् 2000 में हुआ था। जैसा कि अक्सर होता है, हमारा परिचय, मात्र मालिक एवं मूर्तिकार के रूप में हुआ। मेरे जीवन में बहुत सारे व्यक्ति आये हैं परन्तु ईश्वर की कृपा से मेरे व्यक्तित्व में पता नहीं बाबूजी ने क्या महसूस किया कि मुझे उन्होंने बिल्कुल पारिवारिक व्यक्ति की तरह प्यार एवं सम्मान दिया; जिससे हमारे बीच पारिवारिक रिश्ता बन गया। पिताश्री कैलाशचन्द्र जैन आज शतायु पार कर रहे हैं। जैसे कि कहावत है कि पिता के नाम को पुत्र भी रोशन करता है, मैं उस पिता को कोटि-कोटि प्रणाम करता हूँ, जिन्होंने श्री पवन जैन जैसे सुपुत्र को जन्म दिया।

ना जाने कितने शतायु गुमनामी में खो जाते हैं।

वही सुपुत्र होते हैं जो पिता की शतायु, उत्सव की तरह मनाते हैं॥

मेरे प्रिय श्री पवन जैन और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती आशा जैन, पुत्र स्वप्निल जैन, पुत्रवधु प्रिया जैन और पौत्र आर्जव जैन एवं पण्डितश्री कैलाशचन्द्र जैन के समस्त परिवार को मेरी ओर से कोटि-कोटि शुभकामनाएँ।

पण्डितजी के प्रेरक संस्मरण

— आदीश जैन, दिल्ली

सन् 1974 में पण्डित श्री कैलाशचन्द जैन (बुलन्दशहरवाले) बड़ौत पधारे थे, उनकी कक्षा में हमारी मातुश्री (श्रीमती प्रकाशवती जैन) के साथ मेरी 9 वर्षीय बहन अर्चना सबसे आगे बैठती थी। पण्डितजी सबको रटाकर याद कराते थे। पण्डितजी साहब ने पूछा – 'जिसे उभयाभासी का स्वरूप' पता हो, वो हाथ उठाओ। अर्चना ने सबसे पहले हाथ उठाकर सही स्वरूप बता दिया। नौ वर्षीय बच्ची के मुख से उभयाभासी का सही स्वरूप सुनकर पण्डित जी को बहुत आश्चर्य हुआ। उन्होंने अर्चना से कहा – बोल, तुझे क्या ईनाम चाहिए? अर्चना ने कहा – मुझे मोक्ष चाहिए। पण्डितजी साहब ने उसके सिर हाथ फेरकर कहा – 'मैं तुझे आज मोक्ष का तिलक करता हूँ।' एवं जैन सिद्धान्त प्रवेशिका उसको ईनाम मे दी। लगभग डेढ़ वर्ष पूर्व कैंसर से मृत्यु के पहले अर्चना ने पण्डितजी साहब को याद करते हुए हमें यह घटना सुनाई और समाधिपूर्वक प्राण त्याग दिये। **धन्य हैं ऐसे पण्डितजी साहब – जिनके शिष्य भी समाधिपूर्वक देह–त्याग करते हैं।**

छपते-छपते

तत्त्वनिष्ठ व्यक्तित्व : पण्डित कैलाशचन्द्र जैन

— **भरत सेठ,** राजकोट (राज०)

पण्डित श्री कैलाशचन्द्रजी जैन गहन तत्त्व जिज्ञासु आत्मार्थी मुमुक्षु हैं। पूज्य गुरुदेवश्री के परिचय में आते ही उनकी भवतापनाशक वाणी का पण्डितजी के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा है। यद्यपि पण्डितजी का निवास स्थान, सोनगढ़ से अत्यन्त दूर है तो भी पूज्य गुरुदेवश्री के तत्त्वज्ञान का प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त करने के लिये वे बहुत समय तक सोनगढ़ में अकेले रहते थे। भोजनादि की उनके अनुरूप व्यवस्था न होने पर भी, उसे गौण करके आपने पूज्य गुरुदेवश्री के तत्त्वज्ञान का भरपूर लाभ लिया है। जो उनकी तत्त्वजिज्ञासा को दर्शाता है।

आदरणीय पण्डितजी, मेरे पूज्य पिताश्री खीमचन्दभाई सेठ को शिक्षागुरु के रूप में मानते थे। इसलिए जब भी वे सोनगढ़ में होते, तब सायंकाल अचूक हमारे यहाँ पधारते और देर रात तक दोनों की तत्त्वचर्चा चलती रहती थी। आपश्री के द्वारा निर्मित जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला के पाँचवें भाग की विषयवस्तु का अधिकांश मैटर इसी धर्मचर्चा के आधार पर लिया गया है। पण्डितजी एकदम निराभिमानी, विवेकी व्यक्तित्व के धनी हैं।

पण्डितश्री कैलाशचन्द्रजी की भावनानुसार आत्मज्ञ सन्त पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी द्वारा प्राप्त सदुपदेशों के संस्मरण त्रिकाल जयवन्त वर्तें, यही शुभेच्छा है।

क्रान्तिकारी व्यक्तित्व : आदरणीय पण्डितजी

— **सुमनभाई आर. दोशी,** राजकोट

माननीय पण्डित कैलाशचन्द्रजी जैन जबरदस्त व्यक्तित्व के धनी हैं। तत्त्व की बात एकदम सचोट शैली में बतलाना, उनकी विशेषता है। मेरे पिताश्री रामजीभाई दोशी से भी उनका निकटवर्ती सम्पर्क रहा है। अपने सोनगढ़ प्रवास के दौरान पूज्य गुरुदेवश्री के अतिरिक्त श्री खीमचन्दभाई और बापूजी के साथ उनका तात्विक चर्चाओं का आदान-प्रदान होता रहा है। मैं पण्डितजी के जन्म-शताब्दी के अवसर पर उनके द्वारा किये गये कार्यों की अनुमोदना करते हुए उनके यशस्वी जीवन की भावना भाता हूँ।

सादर समर्पण

— **बाबूभाई एन. मेहता,** फतेपुर (गुज०)

परम पूज्य अध्यात्म युगसृष्टा शुद्धात्मा का सिंहनाद करनेवाले पूज्य कहान गुरुदेव के शासनकाल में उनका सिंहनाद सुनकर जागृत हुए पूज्य आध्यात्मरसिक पण्डितश्री कैलाशचन्द्रजी को स्मरण तथा शत-शत वन्दन!

आपने पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में परमात्म तत्त्व की उपासना की है और शायद हिन्दुस्तान में प्रत्येक जगह आबाल-गोपाल सबको जैन सिद्धान्तों का परिचय कराया है। आपश्री की कथनी कठोर होने पर भी कोमलतावाली थी। मिथ्यात्व के कुँए में जीव, निगोदिया जैसा जीवन व्यतीत करता है और फिर से निगोद के मार्ग में गमन न करे, ऐसी आपके अन्दर में करुणा थी। आप, 'निगोद जायेगा' ऐसा कहकर मिथ्यात्व छुड़ाना चाहते थे और मुक्ति के मार्ग में प्रयाण कराने की मङ्गल भावना रखते थे। आपको साधर्मियों के प्रति अत्यन्त वात्सल्यभाव था, मङ्गलायतन के स्वप्नदृष्टा के रूप में आपके द्वारा जो कार्य हुआ है, उसके लिये आपके सुपुत्र श्री पवन जैन भी बधाई के पात्र हैं। मङ्गलायतन आज विश्व की एक धरोहर बन चुकी है जो पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा उद्घाटित धर्म प्रभावना को समूचे विश्व में प्रचारित-प्रसारित करने में सतत् प्रयत्नशील है।

आदरणीय पण्डितजी का हमें अपने गाँव फतेपुर में कई बार लाभ मिला है, उनके द्वारा गुरुदेवश्री के तत्त्वज्ञान को जिस सरल-सुबोध भाषा में समझाया गया है, वह अनुकरणीय है। मैं पण्डितजी के जन्म शताब्दी के अवसर पर उनको सादर वन्दन करता हूँ।

ज्ञानरथ की सारथी..... चार पीढ़ियाँ

— **डॉ. मुकेश 'तन्मय' शास्त्री**

सम्पादक : 'ज्ञानधारा' मासिक पत्रिका विदिशा, मध्यप्रदेश

तीर्थधाम मङ्गलायतन के स्वप्नदृष्टा तथा तीर्थधाम मङ्गलायतन के संस्थापक एवं परम संरक्षक 'मङ्गलायतन मासिक पत्रिका' के यशस्वी मानद सम्पादक तथा जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला (सात भागों) को जिनागम में से संकलित कर सुन्दर प्रश्नोत्तर शैली में संकलन / सम्पादन करनेवाले वयोवृद्ध विद्वान आदरणीय पण्डित श्री कैलाशचन्द्रजी साहब बचपन से ही मेरे आदर्श एवं प्रेरणास्रोत हैं।

मङ्गल समर्पण

मैं जब मात्र पन्द्रह वर्ष का था, पण्डितजी साहब मेरे घर ज्ञानानन्द निवास में विद्वत् अतिथिगृह में महीनों रहकर तीनों समय शिक्षण कक्षा के माध्यम से ज्ञानदान का लाभ देते थे, उनकी दिनचर्या आज भी मेरी आँखों के सामने झूलती है।

उन्होंने अपना सारा जीवन तत्त्वज्ञान की आराधना एवं वीतरागमार्ग की प्रभावना में समर्पित कर दिया। पूज्य गुरुदेवश्री के प्रति उनके हृदय में अनन्य भक्ति है, यही कारण है कि पूज्य गुरुदेवश्री से जो कुछ भी उन्होंने तत्त्वज्ञान प्राप्त किया, वह ज्यों का त्यों बिना नमक-मिर्च के मुमुक्षु समाज को डायरेक्ट परोसा।

आदरणीय पण्डितजी साहब के स्वास्थ्यता एवं दीर्घजीवन की मंगल कामना करते हुए 'ज्ञानधारा' परिवार एवं 'श्री परमागम श्रावक ट्रस्ट सोनागिर' परिवार आपका हार्दिक अभिनन्दन / शत-शत वन्दन करते हुए अपने को गौरवान्वित अनुभव करते हैं।

परम उपकार है

— शान्तिलाल पाटनी, कुसुमलता पाटनी
छिन्दवाड़ा (म०प्र०)

माननीय पण्डितश्री कैलाशचन्द्रजी जैन, अलीगढ़ के शताब्दी वर्ष के मंगल प्रवेश के शुभ अवसर पर शुभकामनाएँ.....

माननीय पण्डितश्री कैलाशचन्द्रजी जैन, आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अनन्य भक्त हैं। समस्त मुमुक्षु समाज, उनके निर्लोभी, निर्भीक, स्पष्टवादी स्वभाव से भलीभाँति परिचित हैं। छिन्दवाड़ा मुमुक्षु समाज से उनका विशेष धर्म स्नेह रहा है। उन्होंने छिन्दवाड़ा पधारकर यहाँ की समाज को अनेक बार तत्त्वज्ञान एवं पूज्य स्वामीजी द्वारा उद्घाटित कुन्दकुन्दाचार्य की परम्परा के गूढ़ गम्भीर सिद्धान्तों को सरल शैली में समझाया एवं हृदयंगम कराया, उसके लिये छिन्दवाड़ा मुमुक्षु समाज उनका कृतज्ञ है। पण्डितजी द्वारा संकलित एवं सम्पादित जैन सिद्धान्त प्रश्नोत्तरमालाएँ भाग 1 से 7 तक काफी लोकप्रिय रही हैं एवं सिद्धान्तों के स्पष्ट विवेचन हेतु पाठकों एवं अभ्यासियों को अत्यधिक रुचिकर रहे हैं।

छिन्दवाड़ा के सभी मुमुक्षु उनके सभी कार्यक्रमों में सम्मिलित होते थे। जो मुमुक्षु परिवार, उनके बच्चे आदि उपस्थित नहीं हो पाते थे, उन्हें वे स्वयं व्यक्तिगतरूप से उनके निवास पर जाकर सम्बोधन करते थे, जिससे वे नियमितरूप से कार्यक्रमों में उपयोग लगायें, अपना जीवन धन्य करें।

हमारे परिवार का पण्डितजी से विशेष सम्पर्क रहा है। हमें पण्डितजी के शतायु होने पर विशेष प्रसन्नता है। साथ ही वे आगे भी चिरायु रहें और समाज को जिनवाणी के अभ्यास के प्रेरणास्रोत बने रहें – ऐसी शुभकामनाएँ हैं। वे स्वस्थ और आत्मकल्याण के मार्ग पर अग्रसर होते रहें – ऐसी मंगल भावना करते हैं।

शत-शत नमन

— **सुरेशचन्द जैन** (माँगरौल, राजस्थान / कोलकाता)

इस निकृष्ट पञ्चम काल में भली होनहार के होने से निकट आत्मरसिक सम्बन्धी श्री पदमचन्दजी (आगरा) के विशेष सहयोग से सन् 1975 और 76 में सोनगढ़ में हम जैसे जीवों को जगाने आये महाउपकारी 'तीर्थङ्कर द्रव्य के रूप में' सद्गुरु श्री कानजीस्वामी का और शायद उन्हीं की प्रेरणा से जागृत हम हिन्दीभाषी के लिए 'गणधर' के रूप में पण्डित श्री कैलाशचन्द्रजी का पावन मिलन हुआ। पण्डित कैलाशचन्द्रजी जैसा व्यक्तित्व उस समय के महान-महान ज्ञानियों में विरले ही थे, क्योंकि मैं समझता हूँ कि अपने जाननहार को जाननहार समझने की अद्भुत विधि बतलाने वाले विद्वानों में प्रथम ही रहे, जिन्होंने अपनी लाठी की सर्वोत्तम उपयोगिता से हमें 'चेतन को है उपयोग रूप.....' कर पाठ पढ़ाकर प्राचीन जैनशासन के गुरुकुल की याद करा दी – ऐसे महामानव पण्डितजी के प्रत्येक शब्द मेरे ज्ञान-शरीर में अंकित होकर अजर-अमर रहें।

उनके ज्ञानस्वभावी-आत्मा को पुनः पुनः प्रणाम करता हुआ मैं और कलकत्ता के मुमुक्षु समाज की ओर से उनके दीर्घायु की भावना करता हूँ।

सादर अभिनन्दन

— एडवोकेट नेमीचन्द जैन, सुधीर
गंजबासौदा (विदिशा)

पूज्य गुरुदेव ने पंचमकाल में चतुर्थ काल सा परिदृश्य उपस्थित कर
स्वानुभवी आध्यात्मिक आभा से, आलोकित जग को कर डाला।
श्री महावीर शासन के, सजग प्रहरी माँ जिनवाणी के मर्मज्ञ।
करुणामूर्ति गुरुदेव श्री को, अर्पित सादर श्रद्धा सुमन माला॥
आदर्श आत्मार्थी, आदरणीय विद्वान पण्डित श्री कैलाशचन्द्रजी जैन
स्वागत शत् शत् बार आपका, अभिनन्दन श्रद्धा सुमन नेह स्वीकार करे।
हम सब की हार्दिक अभिलाषा, शीघ्र ही मुक्तिरमा आपका वरण करे॥
आदरणीय पण्डितजी 99 बसंत कर चुके पार, शतत् करो यही जिज्ञासा।
चिरजीवो शत-शत वर्ष यही हम सब मुमुक्षु के मन की अभिलाषा॥
ज्ञान सरोवर में आभा-रवि, सदगुण जलज खिलाये।
इसीलिए तो हर जन के, मन को तुम अति भाये॥
घर में लक्ष्मी वाणी में सरस्वती, मस्तिष्क में बृहस्पति, पवित्र हो।
जैन जगत के शुभ्र गगन के अनुपम जोर्तिमय नक्षत्र हो।
श्री गुरुदेव श्री के अनन्य हर नगर में आध्यात्मिक रस बरसाया।
जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला की, रचना कर धर्म का मर्म समझाया।
निष्पृह स्पष्टवादी व्यक्तित्व ने, मन सब के ही जीत लिए।
बहुत कठिन आपको विसराना, अतुल प्रेम से भरे हुए॥
उपवन में होते है सुमन अनेक, निराली सुषमा से सुरभित गुलाब होता है।
जग में पण्डित है अनेक, किन्तु कैलाशचन्द्रजी जैसा कोई आफताफ होता है।
अभिलाषा है मन उपवन, आत्मिक- सुरभित सुमनों से भरा रहे।
गुरुदेव के धर्म प्रभावना रथ के सारथी नाम आपका अमर रहे॥

बुलन्द संहनन के धनी पण्डितजी

— केशवदेव जैन

अध्यक्ष, श्री दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल, कानपुर

पूज्य पण्डितप्रवर श्री कैलाशचन्द्रजी बुलन्दशहर 'डण्डेवाले पण्डितजी' के नाम से प्रसिद्ध; जिनकी पावन प्रेरणा का ही फल है कि विश्व प्रसिद्ध 'मङ्गलायतन' का अभ्युदय हुआ है।

एक बार की बात है, लगभग 26 साल पहले दिन के 2 बजे ट्रेन द्वारा पण्डितजी का कानपुर आगमन हुआ। हम करीब 40 लोग उनकी अगवानी को गये।

जैसे ही प्रवचन स्थल पर पहुँचे, बिना आराम किये ही उन्होंने प्रवचन प्रारम्भ कर दिया। उनकी दृष्टि की निर्मलता की क्या बात करें! तेज बुखार में भी मुझे देखने आये और कहने लगे कि तुझे तो बुखार है नहीं; और जिसे बुखार है वह तू है नहीं।

उनकी इस आत्मीयता भरी डांट सुनकर लगा मानो बुखार गायब हो गया और चैतन्य की चेतना सजग हो गयी।

'स्व में बस, पर से खस, आयेगा आत्मा में अतीन्द्रियरस, यही है अध्यात्म का कस और इतना करो तो बस'

उनकी यह बात हमेशा मन में बनी रहती है। बाह्य प्रवृत्तियों को रोकने में यह लगाम का काम करती है।

नव तत्त्वों की परिभाषा, आध्यात्मपरक अर्थगर्भित सदा से ही हृदयस्पर्शी रही है। वे परिभाषाएँ पण्डितजी की आत्मानुभूति सम्पन्नता एवं आत्मज्ञता ही सूचित करती है।

सभी आत्माओं में ज्ञान है, पर धन्य हैं वे आत्मायें, जिनके ज्ञान में आत्मा है। उनकी प्रवचन शैली में इस प्रकार की वार्ताएँ हृदय को झकझोर देनेवाली होती हैं।

अन्त में यही चाहूँगा कि पण्डितजी का सानिध्य हमें हमेशा मिलता रहे और उनके द्वारा प्रतिपादित तत्त्वज्ञान जीवन में चिरस्थायी रहे।

पण्डितजी को अगणित बार नमन करता हुआ विराम लेता हूँ।